

हो अगर रहमत जो तेरी साँवरे भजन लिरिक्स



हो अगर रहमत जो तेरी साँवरे,
जख्म दिल का हर कोई भर जाएगा,
दूर सब कोई नहीं है पास में,
यूँ अकेले दम मेरा घुट जाएगा।

तर्ज - आँख है भरी भरी।

मैं आया था ज़माने में,
तेरे सुमिरन का वादा था,
जा बैठा स्वार्थ की महफ़िल,
पाप अभिमान ज्यादा था,
भूलकर के श्याम तेरी बंदगी,
चैन मेरे दिल को कैसे आएगा,
हो अगर रहमत जो तेरी साँवरे,
जख्म दिल का हर कोई भर जाएगा।

बड़ी बेदर्द है दुनिया,
भरोसा क्या करू इस पर,
हमेशा साथ था जिसके,
वहीं से आ रहे पत्थर,
रहम कर दो मेरे मन पे साँवरा,
छोड़के कहीं और फिर ना जाएगा,
हो अगर रहमत जो तेरी साँवरे,
जख्म दिल का हर कोई भर जाएगा।

सुना है श्याम तू भटकों को,
मंजिल से मिलाता है,
पौछकर दीन के आँसू,
गले अपने लगाता है,
मुझपे भी करदे कृपा की बारिशें,
ये 'मुकेश' तेरा ही गुण गायेगा,
हो अगर रहमत जो तेरी साँवरे,
जख्म दिल का हर कोई भर जाएगा।



जख्म दिल का हर कोई भर जाएगा,
दूर सब कोई नहीं है पास में,
यूँ अकेले दम मेरा घुट जाएगा।

लेखक एवं गायक – मुकेश कुमार जी।
